ISSN : 2583-2948

लघु कथा

बच्ची खेले

डा पद्मजा शर्मा
वरिष्ठ साहित्यकार

घर में बच्ची बीमार थी। सब उसी की चिंता में डूबे हुए थे। तीन दिन से घर में न ढंग से खाना बना न किसी ने खाया। खिलौने और सामान बिखेरने वाली तो बीमार थी।घर साफ सुथरा था। सुनीता ने अपनी सहायिका से कहा -'तुम रोज रोना रोती हो कि आप बर्तन बहुत करते हो।बर्तन मांजते मांजते मैं आंती आ जाती हूं। आपका घर बिखरा रहता है ,संभालने में कितना समय लगता है। गुड़िया से कहो घर में खिलौने न बिखेरे।इन दिनों न ज्यादा बर्तन हो रहे हैं और न ही घर बिखरता है ।अब तो अच्छा लग रहा होगा ?'

उधर से बच्ची की कराहने की आवाज आई। सहायिका बोली -'मेम साहब कई घर में काम करते हैं तो हम भी थक जाते हैं तो बोल जाते हैं। मगर यह कभी नहीं चाहते कि किसी का बच्चा बीमार हो। यही दुआ करती हूं भगवान आपकी बच्ची की सारी अलाएं बलाएं मुझे दे दे मगर उसे स्वस्थ कर दे। बच्ची चहकती थी तो आपके घर आने का मन करता था।अब आपके घर आने का मन नहीं करता। यह घर कितना सूना लगता है।ऐसा साफ सुथरा घर नहीं चाहिए मेमसाहब।बच्ची खेले ,खिलौने बिखेरे और मैं कहूं खिलौने जगह पर रखो ,यही अच्छा लगता है।'

ISSN : 2583-2948